इकाई-III

11. एक कुत्ता और एक मैना

रचनाकार

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 में गाँव 'आरत दूबे का छपरा', बलिया (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उन्होंने उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय से प्राप्त की तथा शांतिनिकेतन, काशी हिंदू विश्वविद्यालय एवं पंजाब विश्वविद्यालय में अध्यापन-कार्य किया। सन् 1979 में उनका देहांत हो गया।

साहित्य का इतिहास, आलोचना, शोध और उपन्यास के क्षेत्र में द्विवेदी जी का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। अशोक के फूल, कुटज, कल्पलता, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा, हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास, हिंदी साहित्य की भूमिका, कबीर उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं पद्मभूषण अलंकरण से सम्मानित किया गया।

द्विवेदी जी ने साहित्य की अनेक विधाओं में उच्च कोटि की रचनाएँ कीं। उनके ललित निबंध विशेष उल्लेखनीय हैं। जटिल, गंभीर और दर्शन प्रधान बातों को भी सरल, सुबोध एवं मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत करना द्विवेदी जी के लेखन की विशेषता है। उनका रचना-कर्म एक सहृदय विद्वान का रचना-कर्म है जिसमें शास्त्र के ज्ञान, परंपरा के बोध और लोकजीवन के अनुभव का सृजनात्मक सामंजस्य है।

प्रस्तावना प्रसंग

एक बार विनोबा जी देहातों में भ्रमण कर रहे थे। तभी एक ग्रामीण ने दूसरे से कहा– "अरे! तू जाणता है यो कौण है?" दूसरे ने कहा– "ना रे! मैं तो ना जाणता। होगा कोई साधु।" पहले ने कहा– "अरे वाह! तू ना जाणता? यो गाँधी महात्मा हैं।" यह सुनकर दूसरा ग्रामीण बहुत हँसा और कहा– "तू भी खूब है, अरे गाँधी महात्मा तो मर गये।" इस पर पहले ने बड़े विश्वास के साथ कहा– "बावले यो तू क्या कहै? अरे! कहीं महात्मा मरा करे हैं?"

प्रश्न

1. आप के विचार में महात्मा लोगों की क्या विशेषताएँ होती हैं?
2. "बावले यो तू क्या कहै? अरे! कहीं महात्मा मरा करे हैं?"–ग्रामीण ने ऐसा क्यों कहा?
3. आप ऐसे कौन–कौन से काम करना चाहेंगे जिससे आप का नाम सदा याद किया जाए?

भूमिका

'एक कुत्ता और एक मैना' निबंध में न केवल पशु-पक्षियों के प्रति मानवीय प्रेम प्रदर्शित है, बल्कि पशु-पक्षियों से मिलने वाले प्रेम, भक्ति, विनोद और करुणा जैसे मानवीय भावों का विस्तार भी है। इसमें रवींद्रनाथ की कविताओं और उनसे जुड़ी स्मृतियों के ज़रिए गुरुदेव की संवेदनशीलता, आंतरिक विराटता और सहजता के चित्र तो उकेरे ही गए हैं, पशु-पक्षियों के संवेदनशील जीवन का भी बहुत सूक्ष्म निरीक्षण है। यह निबंध सभी जीवों को प्रेम की प्रेरणा देता है।

SCERT TELANGANA

आज से कई वर्ष पहले गुरुदेव के मन में आया कि शांतिनिकेतन को छोड़कर कहीं अन्यत्र जाएँ। स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं था। शायद इसलिए, या पता नहीं क्यों, तै पाया कि वे श्रीनिकेतन के पुराने तिमंजिले मकान में कुछ दिन रहें। शायद मौज में आकर ही उन्होंने यह निर्णय किया हो। वे सबसे ऊपर के तल्ले में रहने लगे। उन दिनों ऊपर तक पहुँचने के लिए लोहे की चक्करदार सीढ़ियाँ थीं, और वृद्ध और क्षीणवपु रवींद्रनाथ के लिए उस पर चढ़ सकना असंभव था। फिर भी बड़ी कठिनाई से उन्हें वहाँ ले जाया जा सका।

उन दिनों छुट्टियाँ थीं। आश्रम के अधिकांश लोग बाहर चले गये थे। एक दिन हमने सपरिवार उनके 'दर्शन' की ठानी। 'दर्शन' को मैं जो यहाँ विशेष रूप से दर्शनीय बनाकर लिख रहा हूँ, उसका कारण यह है कि गुरुदेव के पास जब कभी मैं जाता था तो प्रायः वे यह कहकर मुस्कुरा देते थे कि 'दर्शनार्थी हैं क्या?' शुरू-शुरू में मैं उनसे ऐसी बाँग्ला में बात करता था, जो वस्तुतः हिंदी-मुहावरों का अनुवाद हुआ करती थी। किसी बाहर के अतिथि को जब मैं उनके पास ले जाता था तो कहा करता था, 'एक भद्र लोक आपनार दर्शनेर जन्य ऐसे छेन।' यह बात हिंदी में जितनी प्रचलित है, उतनी बाँग्ला में नहीं। इसलिए गुरुदेव जरा मुसकरा देते थे। बाद में मुझे मालूम हुआ कि मेरी यह भाषा बहुत अधिक पुस्तकीय है और गुरुदेव ने उस 'दर्शन' शब्द को पकड़ लिया था। इसलिए जब कभी मैं असमय में पहुँच जाता था तो वे हँसकर पूछते थे 'दर्शनार्थी लेकर आए हो क्या? यहाँ यह दुख के साथ कह देना चाहता हूँ कि अपने देश के दर्शनार्थियों में कितने ही इतने प्रगल्भ होते थे कि समय-असमय, स्थान-अस्थान, अवस्था-अनवस्था की एकदम परवा नहीं करते थे और रोकते रहने पर भी आ ही जाते थे। ऐसे 'दर्शनार्थियों' से गुरुदेव कुछ भीत-भीत से रहते थे। अस्तु मैं मय बाल-बच्चों के एक दिन श्रीनिकेतन जा पहुँचा। कई दिनों से उन्हें देखा नहीं था।

गुरुदेव वहाँ बडे आनंद में थे। अकेले रहते थे। भीड़-भाड़ उतनी नहीं होती थी, जितनी शांतिनिकेतन में। जब हम लोग ऊपर गयछ तो गुरुदेव बाहर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठे अस्तगामी सूर्य की ओर ध्यान-स्तिमित नयनों से देख रहे थे। हम लोगों को देखकर मुसकराए, बच्चों से ज़रा छेड़छाड़ की, कुशल-प्रश्न पूछे और फिर चुप हो गये। ठीक उसी समय उनका कुत्ता धीरे-धीरे ऊपर आया और उनके पैरों के पास खड़ा होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह आँखें मूँदकर अपने रोम-रोम से उस स्नेह-रस का अनुभव करने लगा। गुरुदेव ने हम लोगों की ओर देखकर कहा, ''देखा तुमने, यह आ गये। कैसे इन्हें मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ, आश्चर्य है! और देखो, कितनी परितृप्ति इनके चेहरे पर दिखाई दे रही है।''

हम लोग उस कुत्ते के आनंद को देखने लगे। किसी ने

SCERT TELANGANA

उसे राह नहीं दिखाई थी, न उसे यह बताया था कि उसके स्नेह-दाता यहाँ से दो मील दूर हैं और फिर भी वह पहुँच गया। इसी कुत्ते को लक्ष्य करके उन्होंने 'आरोग्य' में इस भाव की एक कविता लिखी थी- ''प्रतिदिन प्रातःकाल यह भक्त कुत्ता स्तब्ध होकर आसन के पास तब तक बैठा रहता है, जब तक अपने हाथों के स्पर्श से मैं इसका संग नहीं स्वीकार करता। इतनी-सी स्वीकृति पाकर ही उसके अंग-अंग में आनंद का प्रवाह बह उठता है। इस वाक्यहीन प्राणिलोक में सिर्फ यही एक जीव अच्छा-बुरा सबको भेदकर संपूर्ण मनुष्य को देख सका है, उस आनंद को देख सका है, जिसे प्राण दिया जा सकता है, जिसमें अहैतुक प्रेम ढाल दिया जा सकता है, जिसकी चेतना असीम चैतन्य लोक में राह दिखा सकती है। जब मैं इस मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन देखता हूँ, जिसमें वह अपनी दीनता बताता रहता है, तब मैं यह सोच ही नहीं पाता कि उसने अपने सहज बोध से मानव स्वरूप में कौन सा मूल्य आविष्कार किया है, इसकी भाषाहीन दृष्टि की करुण व्याकुलता जो कुछ समझती है, उसे समझा नहीं पाती और मुझे इस सृष्टि में मनुष्य का सच्चा परिचय समझा देती है।'' इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

मैं जब यह कविता पढ़ता हूँ तब मेरे सामने श्रीनिकेतन के तितल्ले पर की वह घटना प्रत्यक्ष-सी हो जाती है। वह आँख मूँदकर अपरिसीम आनंद, 'वह मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन' मूर्तिमान हो जाता है। उस दिन मेरे लिए वह एक छोटी-सी घटना थी, आज वह विश्व की अनेक महिमाशाली घटनाओं की श्रेणी में बैठ गई है। एक आश्चर्य की बात और इस प्रसंग में उल्लेख की जा सकती है। जब गुरुदेव का चिताभस्म कलकत्ते (कोलकाता) से आश्रम में लाया गया, उस समय भी न जाने किस सहज बोध के बल पर वह कुत्ता आश्रम के दूवार तक आया और चिताभस्म के साथ अन्यान्य आश्रमवासियों के साथ शांत गंभीर भाव से उत्तरायण तक गया। आचार्य क्षितिमोहन सेन सबके आगे थे। उन्होंने मुझे बताया कि वह चिताभस्म के कलश के पास थोड़ी देर चुपचाप बैठा भी रहा।

कुछ और पहले की घटना याद आ रही है। उन दिनों शांतिनिकेतन में नया ही आया था। गुरुदेव से अभी उतना धृष्ट नहीं हो पाया था। गुरुदेव उन दिनों सुबह

SCERT TELANGANA

अपने बगीचे में टहलने के लिए निकला करते थे। मैं एक दिन उनके साथ हो गया था। मेरे साथ एक और पुराने अध्यापक थे और सही बात तो यह है कि उन्होंने ही मुझे भी अपने साथ ले लिया था। गुरुदेव एक-एक फूल-पत्ते को ध्यान से देखते हुए अपने बगीचे में टहल रहे थे और उक्त अध्यापक महाशय से बातें करते जा रहे थे। मैं चुपचाप सुनता जा रहा था। गुरुदेव ने बातचीत के सिलसिले में एक बार कहा, ''अच्छा साहब, आश्रम के कौए क्या हो गयछ? उनकी आवाज़ सुनायी ही नहीं देती?'' न तो मेरे साथी उन अध्यापक महाशय को यह खबर थी और न मुझे ही। बाद में मैंने लक्ष्य किया कि सचमुच कई दिनों से आश्रम में कौए नहीं दिख रहे हैं। मैंने तब तक कौओं को सर्वव्यापक पक्षी ही समझ रखा था। अचानक उस दिन मालूम हुआ कि ये भले आदमी भी कभी-कभी प्रवास को चले जाते हैं या चले जाने को बाध्य होते हैं। एक लेखक ने कौओं की आधुनिक साहित्यिकों से उपमा दी है, क्योंकि इनका मोटो है 'मिसचिफ् फार मिसचिफ् सेक' (शरारत के लिए ही शरारत)। तो क्या कौओं का प्रवास भी किसी शरारत के उद्देश्य से ही था? प्रायः एक सप्ताह के बाद बहुत कौए दिखाई दिये।

एक दूसरी बार मैं सवेरे गुरुदेव के पास उपस्थित था। उस समय एक लँगड़ी मैना फुदक रही थी। गुरुदेव ने कहा, ''देखते हो, यह यूथभ्रष्ट है। रोज़ फुदकती है, ठीक यहीं आकर। मुझे इसकी चाल में एक करुण-भाव दिखाई देता है। ''गुरुदेव ने अगर कह न दिया होता तो मुझे उसका करुण-भाव एकदम नहीं दिखता। मेरा अनुमान था कि मैना करुण भाव दिखाने वाला पक्षी है ही नहीं। वह दूसरों पर अनुकंपा ही दिखाया करती है। तीन-चार वर्ष से मैं एक नए मकान में रहने लगा हूँ। मकान के निर्माताओं ने दीवारों में चारों ओर एक-एक सूराख छोड़ रखा है। यह कोई आधुनिक वैज्ञानिक खतरे का समाधान होगा। सो, एक मैना-दंपत्ति नियमित भाव से प्रतिवर्ष यहाँ गृहस्थी जमाया करते हैं, तिनके और चीथड़ों का अंबार लगा देते हैं। भलेमानस गोबर के टुकड़े तक ले आना नहीं भूलते। हैरान होकर हम सूराखों में ईंटें भर देते हैं, परंतु वे खाली बची जगह का भी उपयोग कर लेते हैं। पति-पत्नी जब कोई एक तिनका लेकर सूराख में रखते हैं तो उनके भाव देखने लायक होते हैं। पत्नी देवी का तो क्या कहना! एक तिनका ले आयीं तो फिर एक पैर पर खड़ी होकर ज़रा पंखों को फटकार दिया, चोंच को अपने ही परों से साफ कर लिया और नाना प्रकार की मधुर और विजयोद्घोषी वाणी में गान शुरू कर दिया। हम लोगों की तो उन्हें परवा ही नहीं रहती। अचानक इसी समय अगर पति देवता भी कोई कागज़ का या गोबर का टुकड़ा लेकर उपस्थित हुए तब क्या कहना! दोनों के नाच-गान और आनंद-नृत्य से सारा मकान मुखरित हो उठता है। इसके बाद ही पत्नी देवी ज़रा हम लोगों की ओर मुखातिब होकर लापरवाही-भरी अदा से कुछ बोल देती हैं। पति देवता भी मानो मुसकराकर हमारी ओर देखते, कुछ रिमार्क करते और मुँह फेर लेते हैं। पक्षियों की भाषा तो मैं नहीं जानता; पर मेरा निश्चित विश्वास है कि उनमें कुछ इस तरह की बातें हो जाया करती हैं;

पत्नी- यह लोग यहाँ कैसे आ गये जी?

SCERT TELANGANA

पति- उँह बेचारे आ गयछ हैं, तो रह जाने दो। क्या कर लेंगे!

पत्नी- लेकिन फिर भी इनको इतना तो खयाल होना चाहिए कि यह हमारा प्राइवेट घर है।

पति- आदमी जो हैं, इतनी अकल कहाँ?

पत्नी- जाने भी दो।

पति- और क्या!

सो, इस प्रकार की मैना कभी करुण हो सकती है, यह मेरा विश्वास ही नहीं था। गुरुदेव की बात पर मैंने ध्यान से देखा तो मालूम हुआ कि सचमुच ही उसके मुख पर एक करुण भाव है। शायद यह विधुर पति था, जो पिछली स्वयंवर-सभा के युद्ध में आहत और परास्त हो गया था। या विधवा पत्नी है, जो पिछड़े बिड़ाल के आक्रमण के समय पति को खोकर युद्ध में ईषत् चोट खाकर एकांत विहार कर रही है। हाय, क्यों इसकी ऐसी दशा है! शायद इसी मैना को लक्ष्य करके गुरुदेव ने बाद में एक कविता लिखी थी, जिसके कुछ अंश का सार इस प्रकार है:

''उस मैना को क्या हो गया है, यही सोचता हूँ। क्यों वह दल से अलग होकर अकेली रहती है? पहले दिन देखा था सेमर के पेड़ के नीचे मेरे बगीचे में। जान पड़ा जैसे एक पैर से लँगड़ा रही हो। इसके बाद उसे रोज़ सवेरे देखता हूँ- संगीहीन होकर कीड़ों का शिकार करती फिरती है। चढ़ जाती है बरामदे में। नाच-नाचकर चहलकदमी किया करती है, मुझसे ज़रा भी नहीं डरती। क्यों है ऐसी दशा इसकी? समाज के किस दंड पर उसे निर्वासन मिला है, दल के किस अविचार पर उसने मान किया है? कुछ ही दूरी पर और मैनाएँ बक-झक कर रही हैं, घास पर उछल-कूद रही हैं। उड़ती फिरती हैं शिरीषवृक्ष की शाखाओं पर। इस बेचारी को ऐसा कुछ भी शौक नहीं है। इसके जीवन में कहाँ गाँठ पड़ी है, यही सोच रहा हूँ। सवेरे की धूप में मानो सहज मन से आहार चुगती हुई झड़े हुए पत्तों पर कूदती फिरती है सारा दिन। किसी के ऊपर इसका कुछ अभियोग है, यह बात बिलकुल नहीं जान पड़ती। इसकी चाल में वैराग्य का गर्व भी तो नहीं है, दो आग-सी जलती आँखें भी तो नहीं दिखतीं।'' इत्यादि।

जब मैं इस कविता को पढ़ता हूँ तो उस मैना की करुण मूर्ति अत्यंत साफ होकर सामने आ जाती है। कैसे मैंने उसे देखकर भी नहीं देखा कि किस प्रकार कवि की आँखें उस बिचारी के मर्मस्थल तक पहुँच गईं, सोचता हूँ तो हैरान हो रहता हूँ। एक दिन वह मैना उड़ गई। सायंकाल कवि ने उसे नहीं देखा। जब वह अकेले जाया करती है उस डाल के कोने में, जब झींगुर अंधकार में झनकारता रहता है, जब हवा में बाँस के पत्ते झरझराते रहते हैं, पेड़ों की फाँक से पुकारा करता है नींद तोड़ने वाला संध्यातारा! कितना करुण है उसका गायब हो जाना!

SCERT TELANGANA

प्रश्न-अभ्यास

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

❖ विचार-विमर्श

1. लोग अनेक प्रकार के जानवर घर में पालते हैं। कुछ शौक से तो कुछ उपयोग से। इनका ठीक प्रकार से रख-रखाव न होने के कारण कई प्रकार की बीमारियों के फैलने की भी आशंका होती है। चर्चा कीजिए और बताइए कि जानवरों को पालते समय किन-किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
2. पाठ में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता दर्शायी गई है। सामान्यतः महान लोगों में प्रकृति के प्रति विशेष संवेदनशीलता पाई जाती है। अच्छा इंसान प्रकृति के सभी तत्वों के प्रति सद्भाव रखता है। इस बारे में अपने विचार बताइए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. गुरुदेव ने शांतिनिकेतन को छोड़ कहीं और रहने का मन क्यों बनाया?
2. लेखक की बातें सुनकर गुरुदेव क्यों मुसकरा रहे थे?
3. कुत्ते की किस विशेषता पर गुरुदेव मुग्ध थे?
4. कौए के संबंध में लेखक की कौन-सी धारणा गलत निकली?
5. लेखक ने मैना को विधुर पति या आहत मैना क्यों माना?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. "मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते।" पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
2. गुरुदेव द्वारा मैना को लक्ष्य करके लिखी कविता के मर्म को लेखक कब समझ पाया?
3. आशय स्पष्ट कीजिए।

   इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

शांतिनिकेतन के कला-विद्यालय में श्रीमंत परिवार का एक शिक्षार्थी प्रविष्ट हुआ। उसे अपना कार्य अपने हाथों करने की आदत नहीं थी। कुछ ही दिनों में उसके कमरे में धूल

SCERT TELANGANA

जम गयी। दीवारों पर जाले लग गये। एक दिन वह भोजन करने के बाद लौटने पर यह देख कर दंग रह गया कि सभी वस्तुएँ सही जगहों पर रखी हैं, रंग का सामान और कूचियाँ सुव्यवस्थित हैं, समीप ही धूपबत्ती जल रही है। यह क्रम कई दिनों तक चालू रहा। एक दिन वह भोजन करके अपने कमरे में जरा जल्दी लौट आया। उसने देखा, कला-विभाग के आचार्य नंदलाल बसु उसका कमरा साफ कर रहे हैं। नंदलाल बाबू कहने लगे, ''तुम मेरे छात्र हो। तुम्हारे सब प्रकार के कल्याण का दायित्व मुझ पर है। तुम बचपन से स्वच्छता में पले हो, परंतु उसके लिए तुम्हें नौकरों के सहारे रहना पड़ा है। स्वाभाविक है कि मलिन स्थान पर तुम्हारा चित्त विकल रहता होगा और तुम वांछित कार्य नहीं कर पाते होगे। कला केवल रंग-रेखाओं की रचना मात्र नहीं है, उसके लिए तुम्हारे जीवन में सुरुचि की आवश्यकता है।

प्रश्न 1. विद्यार्थी अपने दैनिक कार्य सही समय पर क्यों नहीं कर पाता होगा?

2. आचार्य नंदलाल बसु ने छात्र का कमरा क्यों साफ किया?

3. इस गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

अभिव्यक्ति–सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. पशु–पक्षियों के आवास अब मनुष्यों ने छीन लिए हैं। न तो जंगल पर्याप्त मात्रा में बचे हैं, न पेड़। इस कारण अनेक पशु–पक्षी लुप्त होते जा रहे हैं? इस संबंध में क्या प्रयास किये जाने चाहिए।
2. गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की क्या विशेषताएँ थीं?
3. पाठ में आधुनिक साहित्यकारों की तुलना कौओं से करने का संदर्भ आया है। पाठ के आधार पर बताइए कि एक साहित्यकार में कौन–कौन से गुणों का होना अनिवार्य है?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ–दस वाक्यों में लिखिए।

1. प्रकृति हमें क्या–क्या संदेश देती है?
2. महान बनने के लिए व्यक्ति में कौन–कौन से गुण होने चाहिए?

SCERT TELANGANA

❖ सृजनात्मक कार्य

जीव-जंतुओं से प्रेम करने का तात्पर्य प्रकृति के प्रति सजग होना भी है। आज आधुनिकता एवं रूढ़िवादिता दोनों ही प्रकृति के लिए खतरा बन गई हैं। इस संबंध में एक लेख लिखिए।

❖ प्रशंसा

पक्षियों को दाने डालना, गायों को रोटी खिलाना, कैद परिंदों को आज़ाद करना, जीव-जंतुओं की सेवा करना आदि पुण्य कार्य माना जाता है। आप बताइए कि पशु-पक्षियों का संरक्षण क्यों करना चाहिए?

भाषा की बात

1. -गुरुदेव ज़रा मुसकरा दिए।
   -मैं जब यह कविता पढ़ता हूँ।
   ऊपर दिए गए वाक्यों में एक वाक्य में अकर्मक क्रिया है और दूसरे में सकर्मक। इस पाठ को ध्यान से पढ़कर सकर्मक और अकर्मक क्रिया वाले चार-चार वाक्य छाँटिए।
2. निम्नलिखित वाक्यों में कर्म के आधार पर क्रिया-भेद बताइए।
   i. मीना कहानी सुनाती है।
   ii. अभिनव सो रहा है।
   iii. गाय घास खाती है।
   iv. मोहन ने भाई को गेंद दी।
   v. लड़कियाँ रोने लगीं।
3. नीचे पाठ में से युग्म शब्दों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं, जैसे-
   समय-असमय, अवस्था-अनवस्था
   इन शब्दों में 'अ' तथा 'अन्' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाए गए हैं। पाठ में से कुछ शब्द चुनिए और 'अ' तथा 'अन्' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए।

परियोजना कार्य

पशु-पक्षियों के बारे में लिखी कविताओं का संग्रह करें और चित्रों के साथ उन्हें प्रदर्शित करें।

SCERT TELANGANA